निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध तथ्यों को जुटाने एवं उनके विश्लेषण में सफल रहा। मेरा पहला शोध प्रश्न था कि शुरुआती कांग्रेस में किस तरह, और कौन सी महिलाएं शामिल हुईं और क्यों? इस प्रश्न के जवाब ढूंढने के क्रम में कांग्रेस की स्थापना से लेकर कांग्रेस के बढ़ते प्रक्रम में कांग्रेस के उद्देश्यों, सिद्धांतों, नीतियों एवं कांग्रेस के कार्यक्रमों तथा गतिविधियों का अध्ययन किया गया। कांग्रेस की स्थापना एवं कांग्रेस की स्थापना के पश्चात 4-5 वर्षों में महिलाओं का कांग्रेस से कोई लेना-देना नहीं था न ही कांग्रेस ने महिलाओं से संबंधित कोई बातचीत की। कहने का मतलब यह कि कांग्रेस की नीतियों एवं कांग्रेस के उद्देश्यों में महिलाओं के कोई मुद्दे नहीं थे और न हीकांग्रेस के कार्यक्रम में महिलाओं की कोई भूमिका थी। किंतु कांग्रेस के संस्थापक ए ओ ह्यूम ने कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन (1885, बंबई) में ही भारतीय राजनीतिक चिंतकों को हिदायत दी थी कि यदि वह राष्ट्र निर्माण की संकल्पना की संरचना में महिला सदस्यों को नहीं शामिल करेंगे या महिला तत्व की उन्नति को नजरअंदाज करेंगे तो उनकी या संकल्पना खोखली साबित होगी। उसके बावजूद भारतीय राष्ट्र नेताओं ने कोई जोरदार कोशिश नहीं की कि महिलाएंराजनीति में सक्रिय हो कांग्रेस में शामिल हो या कांग्रेस की नीतियों में वह भागीदार बनें।

पहली बार 1889 के अधिवेशन (बंबई) में 6 महिलाएं प्रतिनिधि बनकर आयीं और लो इतनी ही महिलाएं श्रोता बनकर आयीं। जिन्हें कुछ भी बोलने का प्रस्ताव रखने की अनुमति नहीं थी सिर्फ वह सुन सकती थी और बैठ सकती थीं। यह महिलाएं उन प्रतिष्ठित परिवारों से थीं, जिनके परिवार से कोई न कोई पुरुष सदस्य कांग्रेस का प्रतिनिधि था एवं राजनीति में सक्रिय रुप से भागीदार था। यह महिलाएं उस समय मौजूद कई महिला संगठनों के दौरान महिलाओं के आप से गठजोड़ के बाद सलाह मशवरा करने के बाद इन महिलाओं ने कांग्रेस में उपस्थिति दर्ज कराने का निर्णय लिया था। क्योंकि कांग्रेस एक राष्ट्रीय राजनीतिक मंच थी जो राष्ट्र के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध थी और महिलाएं अपनी समस्याओं के निवारण एवं आवश्यकताओं की पूर्ति को लेकर अपने उद्धार के उद्देश्य से कांग्रेस में पहुंचने की

कोशिश कर रही थीं। उसके बाद के कई वर्षों में भी महिलाओं की कोई खास भूमिका नहीं नजर आती है। बालिकाओं को या महिलाओं को अक्सर स्वागत गीतों एवं देशभक्ति गीतों के गायन के लिए बुलाया जाता था। जब (1896 से) कांग्रेस अधिवेशन के दौरान स्वदेशी वस्तुओं की प्रदर्शनी लगनी प्रारंभ हुई तो उनमें बनी वस्तुएं अधिकतर महिलाओं द्वारा ही निर्मित होती थी और प्रदर्शनी के रख-रखाव की जिम्मेदारी अक्सर महिलाएं ही देखती थीं।

दूसरा शोध प्रश्न था कि महिलाओं की भागीदारी के क्याक्या कार्यक्रम थे-, या उन्हें किन भूमिकाओं में रखा गया? शोध करने के दौरान बहुत से तथ्य मिले जिनके माध्यम से पता चला कि कांग्रेस के उद्देश्यों एवं नीतियों के अंतर्गत महिलाओं ने कांग्रेस के लिए एवं राष्ट्र के लिए निरंतर कार्य किए एवं कांग्रेस के उद्देश्यों के प्रति प्रतिबद्ध रहीं। निश्चित रुप से महिलाओं ने कांग्रेस के कार्यक्रमों में भागीदार होकर राष्ट्र सेवा में खुद को समर्पित कर दिया और कांग्रेस के उद्देश्यों को सफल बनाया।

तीसरा शोध प्रश्न था कि महिलाओं ने कांग्रेस के लिए क्या-क्या किया, किस तरह उनहोंने कांग्रेस के मूल्यों को आत्मसात किया एवं कैसे कांग्रेस के उद्देश्यों को सफल बनाया? कांग्रेस के द्वारा जब कभी भी महिलाओं को कोई काम दिया गया या किसी भी तरह की मदद के लिए उन्हें बुलाया गया तो महिलाओं ने इनकार नहीं किया और आगे बढ़कर जितना हो सका उन्होंने अपना सहयोग दिया। कांग्रेस के आयोजनों में सबसे बड़ा आयोजन होता था, कांग्रेस का राष्ट्रीय अधिवेशन जिसके संपन्न होने में तीन-चार दिन लगते थे और पंडाल की देख-रेख, साफ-सफाई में कई दिनों का समय लगता था, बहुत से लोगों के रहने-खाने की व्यवस्था की जाती थी। जिनमें अक्सर महिलाएं ही अधिक हुआ करती थीं। इस प्रकार देखते हैं कि कांग्रेस के बड़े-बड़े आयोजनों में महिलाओं की यह भूमिका बहुत ही अहमियत रखती है। कांग्रेस के अधिवेशन में अधिक से अधिक महिलाएं उपस्थित हो सकें इसके लिए जो अधिक सक्रिय महिलाएं थी वही कांग्रेस के महत्व का लोगों में प्रचार करती थीं, अन्य महिलाओं को आकर्षित करने के लिए उनमें कांग्रेस की खूबियों और महत्व का प्रचार करती थीं।

महिलाएं भी अपनी आजादी को लेकर सजग थीं, वह भी कांग्रेस के साथ हाथ बटा रही थीं। ताकि राष्ट्र को जल्दी से जल्दी अंग्रेजी सरकार से मुक्ति मिल सके। इसके लिए उन्होंने कांग्रेस के द्वारा निर्देशित सभी राष्ट्रव्यापी आंदोलनों में भाग लिया एवं अंग्रेजी कानूनों एवं अंग्रेजी शासन का पूरी तरह विरोध किया और विरोध प्रदर्शनों में भाग लिया। इसके चलते उन्होंने अंग्रेजी शासन की दमन नीतियों का सामना भी किया।

महिलाओं ने समाय-समय पर कांग्रेस को नेतृत्व भी प्रदान किया, अगर कांग्रेस में महिलाओं के द्वारा नेतृत्व की बात करें तो कांग्रेस में समय-समय पर महिलाओं ने भी नेतृत्व किया। 1917 का कलकत्ता अधिवेशन एनी बेसेंट की अध्यक्षता में हुआ। 1925 कानपुर अधिवेशन सरोजिनी नायडू की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। 1933 का अधिवेशन नेली सेनगुप्ता की अध्यक्षता में हुआ। आगे के अधिवेशनों में महिलाओं को कांग्रेस समिति के अंय कई पदों पर भी रखा गया महिलाओं ने अपने प्रभावशाली भाषण भी दिए। लोगों को आकर्षित भी किया और उनके द्वारा सुझाए गए सुझाव को सराहना भी मिली। सरोजिनी नायडू का अध्यक्षीय भाषण बहुत ही प्रभावशाली था उनका पूरा भाषण अंग्रेजी में था उन्होंने देश के विभिन्न मुद्दों पर बात की संस्कृत से लेकर सामाजिक राजनीतिक मुद्दों एवं ब्रिटिश शासन पर करारा प्रहार भी किया। सांप्रदायिक भावनाओं को कम करने के लिए मुस्लिम लोगों को राष्ट्रहित में सोचने के लिए कहा। 1946, मेरठ में रामदुलारी का भाषण बहुत ही जोशीला एवं आक्रामक था, जिसमें कांग्रेस के नेताओं को यह सलाह दी गई कि वह ब्रिटिश शासन व ब्रिटिशों की नीति पर विश्वास न करें। वह सरकार विश्वास करने के योग्य नहीं है उसका पूरी तरह दमन होना चाहिए। वह अपने भाषण में ब्रिटिश क्योंकि योजनाओं को पूरी तरह से खारिज करने को कहती हैं। इस प्रकार हम पाते हैं कि महिलाएं भी राष्ट्रीय राजनीति में पूरी तरह भागीदार हो चुकी थीं। वह भी राष्ट्रीय मंच से करो के साथ बोल सकते थे बोल रही थी और उनको सुनने के लिए लाखों की तादाद में लोग इकट्ठा हो रहे थे।

बहुत जगह तो स्पष्ट भी नहीं हो पाता की महिलाओं के लिए क्या निश्चित था क्या नहीं। कांग्रेस के लिए महिलाएं कितना महत्व रखती थी या नहीं भी। किंतु इतना साफ दिखता है कि जब कांग्रेस ने कोई बड़ा आंदोलन छेड़ा या जनसमर्थन की जरूरत हुई तुम महिलाओं नेसबसे पहले साथ दिया और वहां महिलाओं की आवश्यकता भी थी। और तभी इस बात की साफ पुष्टि की गई की महिलाएं वह ताकत है जो अंग्रेजी शासन को हिला सकती हैं। अहिंसक आंदोलनों की अमिट शक्ति के रूप में उनका प्रयोग किया गया। और महिलाओं ने अपना सर्वस्व लगा भी दिय, साधारण जीवन जीने के तरीके अपनाकर उन्होंने आजादी के संघर्ष में बढ़-चढ़कर भाग लिया।

जब युद्ध के लिए सैनिकों को भर्ती किया जा रहा था तो सबसे पहले कुर्बानी मांगी गई, महिलाओं से और बहनों से कि वह अपने घर के परिवार के नव युवकों को राष्ट्र के प्रति खुद को समर्पित करने के लिए तैयार करे, राष्ट्र की सेवा में अपनी जान की बाजी लगाएं। महिलाओं ने अपनी ममता को दांव पर लगाकर राष्ट्र के लिए इस तरह आजादी का रास्ता तैयार किया और बराबर कांग्रेस की नीतियों में भागीदार बनी रहीं। जब कहा गया कि धरना करो तो महिलाओं ने धरना किया, विदेशी कपड़ों की होली जलाई, शराब की दुकानों में तोड़फोड़ भी की, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया, अंग्रेजी सरकार का विरोध किया है, अंग्रेजी कानून का विरोध किया और इसके एवज में उन्हें जेल भी जाना पड़ा। उसके परिणाम स्वरुप है कांग्रेस अपने उद्देश्यों को सफल बना पाई और स्वाधीनता मिल सकी।

चौथा शोध प्रश्न था कि क्या कांग्रेस महिलाओं को उनकी प्रतिभा के मुताबिक उचित मंच दे पायी? जिस प्रकार महिलाओं ने कांग्रेस के प्रति रुझान दिखाया, समर्पित भाव रखा, राष्ट्र भावना से प्रेरित होकर कार्य किया। लेकिन कांग्रेस ने इस तरह का कार्य महिलाओं के लिए नहीं किया, यदि कांग्रेस चाहती तो महिलाओं की स्थिति और बेहतर कर सकती थी, राजनीति में महिलाओं को और सक्षम बना सकती थी। प्राप्त तथ्यों का विवेचन करने से तो यही प्रतीत होता है कि कांग्रेस ने सिर्फ आवश्यकता अनुरूप महिलाओं का प्रयोग किया। महिलाओं को अहिंसक आंदोलन की प्रमुख शक्ति बताया और

उनकी ऊर्जा का इस्तेमाल किया। क्योंकि कांग्रेस की नीतियों में लगभग अहिंसक मार्ग ही प्रबल था। क्रांतिकारी गतिविधियां भी हो रही थी किंतु राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप अहिंसक ही रहा। यह बात कहीं भी स्पष्ट नहीं हो पाती कि कांग्रेस ने महिलाओं की प्रतिभा को निखारने का प्रयास किया हो या महिलाओं की प्रतिभा के मुताबिक कोई नीतियां और कार्यक्रम तैयार किए हों या महिलाओं को आगे लाए हों किंतु यह बातें सामने साफ निखर कर आती हैं की जरुरत पड़ने पर महिलाओं का इस्तेमाल जरुर किया गया।

पांचवा शोध प्रश्न था कि आजादी के समय महिलाओं को मुख्यधारा से एवं बाद में क्यों ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से गायब कर दिया गया? इस प्रश्न का जवाब प्राप्त तथ्यों के गहन विश्लेषण के बाद ही तय किया जा सकता है, उस समय की सामाजिक/सांस्कृतिक एवं राजनीतिक जरूरतों तथा दबावों को जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। भले ही राष्ट्र की आजादी उच्च शिक्षा प्राप्त राष्ट्रवादियों द्वारा सुनिश्चित, मार्ग निर्देशित की गई हो किंतु बहुत से लोगों की सांस्कृतिक, पारंपरिक बोझों को ढ़ोने की आदत नहीं बदली जा सकी और उसे पितृसत्तात्मक स्वरूप में बनाए रखने की चेष्टा के तहत ही महिलाएं मुख्यधारा से हट गई होंगी या हटा दी गई होंगी, ऐसा अनुमान है। उसी प्रवृत्ति का स्वरूप आजादी के बाद भी ऐतिहासिक लेखन में साफ दिखाई देता है।

इस प्रकार निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि यह शोध निश्चित ही महत्वपूर्ण है और कांग्रेस में महिलाओं की भूमिका इससे स्पष्ट हो जाती है। महिलाओं ने कांग्रेस को उपयुक्त सहयोग अवश्य ही दिया और कांग्रेस के उद्देश्यों को सफल बनाने में सार्थक मदद की जिनका योगदान सराहनीय और महत्वपूर्ण है।